ISSN: 0976-2671

वर्ष-14 अंक : 01-02 जनवरी-जून : 2024

अनुचिन्तन विमर्श

A Multidisciplinary peer Reviewed (Refereed) Journal

अनुचिन्तन फाउण्डेशन एवं अंग विकास परिषद् की त्रैमासिक पत्रिका

(रजि० नं०-1831/2009-10 एवं 910/93-94, सोसाइटी रजिस्ट्रेशन एक्ट 21,1860)

www.anuchintanfoundation.webs.com

विषय सूची

अनुचिन्तन विमर्श,
वर्ष– 14, अंक– 1–2, जनवरी–जून 2024 ISSN: 0976-2671

1. महिला उद्यमियों की स्थिति में सुधार हेतु सरकारी योजनाओं का विश्लेष्णात्मक अध्ययन

4/ राहुल कुमार सिंह एवं बैजनाथ सिंह

2. झारखण्ड राज्य के पूर्वी सिंहभूम जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं में आर्थिक सशक्तीकरण : एक अध्ययन

16/अजय कुमार देव

3. धर्म – मीमांसा के अंतर्गत ईश्वर की अवधारणा एवं नैतिक उपदेश

21/ज्ञान प्रकाश

4. भारतीय संस्कृति के विविध आयाम

26/ परशुराम तिवारी

5. अपनी रीति–नीति से बनाएं सुरक्षित पर्यावरण की रणनीति

37/ विजय शंकर

6. भारतीय संस्कृति के विविध आयाम

44/ श्रीमती सुषमा सिन्हा

7. भारतीय संस्कृति के विविध आयामः एक विश्लेष्णात्मक अध्ययन

49/ शालिनी कुमारी

8. प्रकृति एवं मानव संबंध : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

54/ जय नन्दन सिंह

9. संताली भाषा–साहित्य के विकास में विदेशी ईसाई मिशनरियों की भूमिका

61/ सुशील टुडू

10. दक्षिण अफ्रीका में गांधी जी के सत्याग्रह का विश्लेषणात्मक अध्ययन

68/ सोनिका भारती

11. जन संचार तकनीक एवं कृषि : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

76/ धनंजय कुमार मंडल

12. प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि व्यय तथा समायोजन में शिक्षकों की भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन

82 / ब्यूटी कुमारी

13. भारत में अनुसूचित जनजातियों की राजनीतिक भागीदारी

87 / कुसुम कुमारी

14. ग्रामीण रोजगार सृजन में संचार सुविधाओं की भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन

91 / अजित मंडल

15. बाबा बैद्यनाथ धाम मंदिर का विश्लेषणात्मक अध्ययन

95 / परिणीता कुमारी एवं महालक्ष्मी जौहरी

16. हरम की महिलाएं एवं पर्व त्योहार : मुगल शासकों के संदर्भ में विश्लेषणात्मक अध्ययन

101 / प्रतिभा कुमारी

17. हिन्दी साहित्य में शिवनारायण के योगदान का विश्लेषणात्मक अध्ययन

105 / अभिषेक कुमार

ISSN- 0976-2671
अनुचिंतन विमर्श, वर्ष–14, अंक–01 – 02, जनवरी – जून 2024

बाबा बैद्यनाथ धाम मंदिर का विश्लेषणात्मक अध्ययन

*परिणीता कुमारी एवं **महालक्ष्मी जौहरी
*शोधार्थी, पी.के. विश्वविद्यालय, शिवपुरी (म.प्र.)
Email: parinitasinha4287@gmail.com
**विभागाध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान, पी.के. विश्वविद्यालय, शिवपुरी(म.प्र.)

सारांश

भारत के झारखंड राज्य के देवघर जिले में स्थित हिंदू धर्म के सबसे पवित्र और महत्वपूर्ण तीर्थ स्थलों में से एक बैद्यनाथ धाम है। मंदिर भगवान शिव को समर्पित है और बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है, जो शिव का एक पवित्र मंदिर है। समय के साथ मंदिर परिसर का निर्माण और पुनर्निर्माण किया गया है, जो इस क्षेत्र में रहने वाले विभिन्न समुदायों की धार्मिक मान्यताओं और प्रथाओं को दर्शाता है। इस शोध का मुख्य उद्देश्य मंदिर परिसर का ऐतिहासिक तथ्यों का अध्ययन करना है।

शब्द कुंजी: बैद्यनाथधाम, तीर्थ स्थल, वास्तु कला, पौराणिक कथा, मंदिर परिसर

परिचय

बैद्यनाथ धाम का मंदिर सदियों से तीर्थ यात्रा का केंद्र रहा है, देश भर से लाखों भक्तों को आकर्षित करता है। मंदिर का समृद्ध इतिहास और स्थापत्य महत्व इसे धार्मिक विश्वासों और स्थापत्य कला के बीच प्रतिच्छेदन के अध्ययन के लिए एक आदर्श विषय बनाता है। बैद्यनाथ धाम मंदिर परिसर में कई संरचनाएं हैं, जिनमें भगवान शिव को समर्पित प्राथमिक मंदिर, छोटे मंदिर, सभाओं के लिए सभामंडप और सहायक भवन शामिल हैं। इन संरचनाओं को आंगनों के चारों ओर व्यवस्थित किया गया है, जिससे भक्तों को अनुष्ठान करने, ध्यान लगाने और धार्मिक चर्चाओं में शामिल होने के लिए जगह मिलती है। मंदिर परिसर में रास्तों और गलियारों का एक जटिल जालतन्त्र है, जो पवित्र स्थान के भीतर भक्तों की आवाजाही को सुविधाजनक बनाता है। धार्मिक संरचनाओं के अलावा, मंदिर परिसर में अतिथिशाला, प्रशासनिक कार्यालय और भंडारण स्थान जैसी सुविधाएं भी शामिल हैं। ये सहायक भवन मंदिर के दैनिक कामकाज को समर्थन देने, धार्मिक आयोजनों के सुचारू निष्पादन को सुनिश्चित करने और मंदिर में आने वाले भक्तों की जरूरतों को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

बैद्यनाथ धाम मंदिर परिसर, क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत को दर्शाते हुए कई कलात्मक तत्वों और शास्त्रो से सुशोभित है। मंदिर की दीवारों, स्तंभों और छतों को हिंदू पौराणिक कथाओं के दृश्यों को चित्रित करने वाली जटिल नक्काशी

और मूर्तियों से सजाया गया है, जिसमें भगवान शिव, पार्वती और अन्य देवताओं से संबंधि
ात कहानियां शामिल हैं। ये कलात्मक तत्व भक्तों के बीच हिंदू धर्म की गहरी समझ और
प्रशंसा को बढ़ावा देते हुए धार्मिक संदेशों और कहानियों को व्यक्त करने का काम करते
हैं। मंदिर परिसर में विभिन्न शास्त्रीय तत्व भी हैं, जैसे कि पवित्र प्रतीक और भगवान शिव
और अन्य देवताओं से जुड़े रूपांकन। ये प्रतीक गहरा आध्यात्मिक महत्व रखते हैं, जो
मंदिर और इसके आगंतुकों के लिए दिव्य आशीर्वाद और सुरक्षा का आह्वान करते हैं।

मंदिर पर प्रारंभिक अध्ययनों में से एक *'The Temples of Deoghar'* द्वारा *'Late Rajendra Laal Mitra'* में आयोजित किया गया था, जिसने मंदिर परिसर का विस्तृत विवरण प्रदान किया, जिसमें इसकी वास्तुकला और तकनीक विशेषताएं शामिल थीं। इस अध्ययन ने मंदिर के बनावट और निर्माण में मूल्यवान अंतरदृष्टि प्रदान की, जिसमें इसके निर्माण में प्रयुक्त सामग्री और तकनीक भी शामिल थी। *"The Baidnyanath Glory"* द्वारा *'Dr- Pradip Kumar Sinhgha Deo'* में किए गए एक अन्य अध्ययन में उन धार्मिक विश्वासों की जांच की गई, जिन्होंने मंदिर के निर्माण और बनावट को प्रभावित किया है। इस अध्ययन ने समुदाय को मंदिर के महत्व और इसके निर्माण और बनावट को प्रभावित करने वाले धार्मिक विश्वासों की एक मूल्यवान समझ प्रदान की। अधिक हाल के अध्ययनों ने मंदिर के अध्ययन में आधुनिक तकनीक के उपयोग पर ध्यान केंद्रित किया है। *"Banwari Laal Kanchhal"* ने मंदिर परिसर और इसकी वास्तुकला और तकनीकी बनावट का विस्तृत विश्लेषण प्रदान करने के लिए वास्तुशिल्प छायांकन का उपयोग किया। इस अध्ययन ने मंदिर परिसर की एक मूल्यवान समझ प्रदान की, जिसमें इसके स्थापत्य और तकनीकी बनावट, और समय के साथ इसे प्रभावित करने वाले धार्मिक विश्वास शामिल हैं।

साहित्य समीक्षा

बैद्यनाथ धाम मंदिर की वास्तुकला और तकनीक पर साहित्य अपेक्षा.त सीमित है, अधिकांश पिछले अध्ययनों में मंदिर के धार्मिक और पौराणिक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया गया है। हालांकि, बैद्यनाथ धाम मंदिर की वास्तुकला और तकनीकी का बड़े पैमाने पर अध्ययन नहीं किया गया है,फिर भी कुछ प्रमुख अध्ययनों ने मंदिर परिसर के स्थापत्य और तकनीकी बनावट की जांच की है, इसके निर्माण, सामग्री और तकनीकों में बहुमूल्य अंतरदृष्टि प्रदान की है। बैद्यनाथ धाम मंदिर परिसर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और स्थापत्य संरचना की व्यापक समझ इस शोध के लिए महत्वपूर्ण है।

मित्रा (1879) द्वारा किया गया एक अध्ययन मंदिर परिसर का विस्तृत विवरण प्रदान करता है, जिसमें इसकी वास्तुकला और तकनीकी विशेषताएं शामिल हैं, जो इस शोध के लिए एक मूल्यवान प्रारंभिक बिंदु के रूप में कार्य करता है। मित्रा का शोध मंदिर के वनावट पर क्षेत्रीय शैलियों के प्रभाव पर जोर देता है और मंदिर परिसर के विभिन्न निर्माण चरणों पर प्रकाश डालता है।

सिंह देव (2002) द्वारा किया गया एक अन्य अध्ययन उन धार्मिक विश्वासों की पड़ताल करता है जिन्होंने मंदिर के निर्माण और बनावट को प्रभावित किया। लेखक मंदिर के ऐतिहासिक संदर्भ, स्थानीय समुदाय के लिए मंदिर के महत्व और इसके निर्माण और बनावट को सूचित करने वाले धार्मिक विश्वासों की जांच करता है। यह कार्य ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और बैद्यनाथ धाम मंदिर परिसर के धार्मिक महत्व की बहुमूल्य अंतरदृष्टि प्रदान करता है।

कंछल (2013) ने मंदिर परिसर और इसकी वास्तुकला और तकनीकी बनावट का विस्तृत विश्लेषण प्रदान करने के लिए वास्तुशिल्प छायांकन का इस्तेमाल किया। अध्ययन ने मंदिर परिसर की एक मूल्यवान समझ प्रदान की, जिसमें इसके स्थापत्य, तकनीकी बनावट, और समय के साथ इसे प्रभावित करने वाले धार्मिक विश्वास शामिल थे। मंदिर की संरचनात्मक विशेषताओं के अधिक गहन विश्लेषण के लिए उन्नत तकनीक के उपयोग की अनुमति दी गई, जिससे धार्मिक विश्वासों और स्थापत्य संरचना के बीच जटिल परस्पर क्रिया को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिली।

जोशी (2014) द्वारा किया गया एक अध्ययन स्थानीय अर्थव्यवस्था में मंदिर की भूमिका और आसपास के समुदाय के सामाजिक ताने–बाने पर इसके प्रभाव की पड़ताल करता है। लेखक का काम धार्मिक सभाओं, सांस्तिक कार्यक्रमों और सामुदायिक गतिविधियों के केंद्र के रूप में मंदिर के महत्व और पर्यटन और तीर्थयात्रा के माध्यम से स्थानीय अर्थव्यवस्था पर इसके प्रभाव पर जोर देता है।

गिरि (2015) ने मंदिर परिसर के भीतर होने वाले विभिन्न अनुष्ठानों और धार्मिक प्रथाओं का विश्लेषण किया, जिसमें देवता की दैनिक पूजा, त्योहारों का पालन और विशेष समारोहों का प्रदर्शन शामिल है। अध्ययन ने अपने भक्तों के आध्यात्मिक जीवन में मंदिर की भूमिका और अनुष्ठान अभ्यास के माध्यम से धार्मिक विश्वासों को लागू करने के तरीकों के बारे में बहुमूल्य अंतरदृष्टि प्रदान की।

वर्मा (2017) ने सामाजिक सद्भाव और पारस्परिक संवाद को बढ़ावा देने में बैद्यनाथ धाम मंदिर परिसर की भूमिका का पता लगाया। शोध ने विभिन्न समुदायों के बीच एकता और सहिष्णुता की भावना को बढ़ावा देने, विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं के अभिसरण के लिए एक स्थान के रूप में मंदिर के कार्य पर प्रकाश डाला। अध्ययन ने विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक समूहों के बीच सामाजिक सामंजस्य और संवाद को सुविधाजनक बनाने में मंदिर के महत्व पर भी जोर दिया।

शर्मा (2019) ने बैद्यनाथ धाम मंदिर पर विशेष ध्यान देने के साथ हिंदू धर्म में बारह ज्योतिर्लिंगों के आध्यात्मिक महत्व की गहन जांच की। अध्ययन में प्राथमिक तीर्थ स्थलों के रूप में ज्योतिर्लिंगों के महत्व और हिंदुओं के बीच आध्यात्मिक और धार्मिक भक्ति को बढ़ावा देने में उनकी भूमिका पर प्रंकाश डाला गया। शोध ने हिंदू धर्म में सबसे पवित्र स्थलों में से एक के रूप में बैद्यनाथ धाम मंदिर के सांस्कृतिक महत्व पर भी जोर दिया।

इसके महत्व के बावजूद, मंदिर अपनी वास्तुकला और तकनीक के व्यापक अध्ययन का विषय नहीं रहा है। इस शोध का उद्देश्य मंदिर परिसर के बनावट, निर्माण और तकनीकी सहित गहन विश्लेषण प्रदान करके इस अंतर को भरना है।

भवन निर्माण सामग्री और निर्माण तकनीक

बैद्यनाथ धाम मंदिर परिसर के निर्माण में स्थानीय रूप से निर्मित निर्माण सामग्री, जैसे कि बलुआ पत्थर और चूना गारा का उपयोग शामिल था। इन सामग्रियों का चुनाव स्थानीय पर्यावरण के बारे में भवन निर्माता के ज्ञान और क्षेत्र की जलवायु परिस्थितियों को सहन करने वाली सामग्रियों का चयन करने की उनकी क्षमता को दर्शाता है। मंदिर के निर्माण में नियोजित निर्माण तकनीक पत्थर की चिनाई की महारत को प्रदर्शित करती है, जैसे मंदिर के कुछ हिस्सों में गारा के उपयोग के बिना सटीक नक्काशी और पत्थर के सांचो को ठीक से बिठाकर जमाना । भवन निर्माताओं ने मंदिर के जटिल और जटिल बनावट को बनाने के लिए उन्नत तकनीकों, जैसे कैंटिलीवर संरचनाओं और कॉर्बेल्ड मेहराबों को भी नियोजित किया।

मंदिर में अनुष्ठान और समारोह

बैद्यनाथ धाम मंदिर परिसर पूजा का एक सक्रिय स्थल है, जिसमें प्रतिदिन विभिन्न अनुष्ठान और समारोह होते हैं। इन अनुष्ठानों में प्रार्थना की पेशकश, पवित्र भजनों का पाठ, और विशेष संस्कारों का प्रदर्शन शामिल है, जैसे कि अभिषेकम, एक अनुष्ठान जहां शिवलिंग को पानी, दूध या अन्य पवित्र पदार्थों से स्नान कराया जाता है। मंदिर में साल भर विभिन्न त्योहारों का भी आयोजन होता है, जिसमें हजारों भक्त आते हैं जो उत्सव में भाग लेते हैं और देवता से आशीर्वाद मांगते हैं। मंदिर परिसर के बनावट और विन्यास को इन अनुष्ठानों और समारोहों के प्रदर्शन की सुविधा के लिए संरचित किया गया है, विशेष रूप से विभिन्न धार्मिक गतिविधियों के लिए निर्दिष्ट स्थान के साथ। मंदिर की वास्तुकला में ऐसी विशेषताएं भी शामिल हैं जो इन घटनाओं के दौरान भक्तों के सुचारू प्रवाह की सुविधा प्रदान करती हैं, जैसे कि विस्तृत गलियारे, विशाल प्रांगण और अलग प्रवेश द्वार और निकास।

मंदिर का सामाजिक–सांस्कृतिक महत्व

बैद्यनाथ धाम मंदिर परिसर स्थानीय समुदाय और व्यापक हिंदू आबादी के लिए अत्यधिक सामाजिक–सांस्कृतिक महत्व रखता है। यह धार्मिक समारोहों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और सामुदायिक गतिविधियों के लिए एक केंद्र बिंदु के रूप में कार्य करता है, भक्तों के बीच एकता की भावना और साझा पहचान को बढ़ावा देता है। मंदिर स्थानीय अर्थव्यवस्था में भी एक आवश्यक भूमिका निभाता है, धार्मिक आयोजनों और त्योहारों के दौरान भक्तों की आमद से क्षेत्र में व्यवसायों को बढ़ावा मिलता है। एक सांस्कृतिक और धार्मिक स्थल के रूप में मंदिर का संरक्षण और प्रचार समुदाय के सामाजिक और आर्थिक कल्याण में योगदान देता है।

बैद्यनाथ धाम मंदिर का आर्थिक और सामाजिक प्रभाव

स्थानीय समुदाय पर बैद्यनाथ धाम मंदिर परिसर के आर्थिक प्रभाव की भी साहित्य में जांच की गई है। जोशी (2014) ने आसपास के क्षेत्र पर मंदिर के आर्थिक प्रभावों पर एक अध्ययन किया, जिसमें इस बात पर ध्यान केंद्रित किया गया कि मंदिर ने पर्यटन, रोजगार के अवसरों और बुनियादी ढांचे के विकास के माध्यम से स्थानीय अर्थव्यवस्था में कैसे योगदान दिया है। शोध से पता चला कि मंदिर परिसर स्थानीय आबादी की आजीविका का समर्थन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और क्षेत्र के समग्र विकास में योगदान देता है। यहां प्रतिदिन लाखों की संख्या में श्रद्धालु भक्तजन आते हैं जो पुजा अर्चना के साथ – साथ यहां से अनेक प्रकार के समाग्री खरीद कर ले जाते हैं। यहां मंदिर प्रांगन और उसके आस – पास में विवाह, यज्ञोपवित, मुण्डन संस्कार आदि के लिए भी लोग आते हैं। इससे यहां के व्यपार में काफी वृद्धि होती है। वास्तव में यदि देखा जाए तो संपूर्ण देवघर शहर और उसके आस–पास के क्षेत्र की आर्थिक गतिविधियां प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से बाबा मंदिर पर निर्भर करता है। जहां तक सामाजिक वातावरण का प्रश्न है तो देवघर शहर का सामाजिक वातावरण मिला जुला वातावरण है। यहां का सामाजिक वातावरण झारखण्ड के अन्य शहरों की तुलना में बिल्कुल अलग है।

निष्कर्ष

बैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग भारत के जो वर्तमान में झारखण्ड प्रदेश (संयुक्त बिहार प्रदेश) के संताल परगना के पर्वतीय क्षेत्र में अवस्थित है। तीर्थों की धार्मिक परंपरा में इसका महत्वपूर्ण स्थान है। देवघर का इतिहास देवघर के मंदिरों का इतिहास है। आज देवघर जो कुछ भी दिखलाई पर रहा है, वह बाबा मंदिर का ही परिणाम है। अतीत के झरोखे से झांकने के बाद ऐसा लगता है कि देवघर सदैव समस्त भारतीय संस्कृति का वाहक रहा है। कम से कम 12 सौ वर्षों की ऐतिहासिक सामग्री से यह साफ स्पष्ट होता है कि देवघर जनपद नहीं होने के बावजूद भी आम लोगों के हृदय मंदिर में पवित्र मुर्ति के समान रहा, राज्य नहीं रहने पर भी हमेशा देश के राजाओं, महाराजाओं और छोटे–छोटे सामंतों की इष्टदेव की भूमि के रूप में आदर प्राप्त करता रहा और गंगा के किनारे नहीं रहने पर भी सदैव गंगा जल से धुलता रहा है। पूर्वांचल में बाबा बैद्यनाथ मंदिर ऐतिहासिक बोध की आधार भूमि है। धार्मिक साहित्य में इसके इतिहास के संबंध में बहुश्रुत सामग्रीयाँ है। संपूर्ण भारत में द्वादश ज्योतिर्लिंग के मंदिरों की श्रृखला में इसके ऐतिहासिक संदर्भ को सभी स्वीकार करते हैं। इस ज्योतिर्लिंग का उल्लेख साधना की परंपरा में भी प्रतिष्ठित है।

संदर्भ सूची

1, मित्रा, आरएल(1879) देवघर के मंदिर, जर्नल ऑफ द एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, 48(1), 1–20।

2. सिंह देव, पीके(2002) बैद्यनाथ महिमा, बिहार एसोसिएशन फॉर एडवांसमेंट ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी।
3. धर, पीपी (2005) पूर्वी भारत के मंदिर वास्तुकला, शुभी प्रकाशन, कंछल, बीएल (दूसरा)। बाबा बैद्यनाथ धाम, किताब, प्रकाशक अज्ञात।
4. मैकलीन, के. (2008) तीर्थयात्रा और शक्ति : इलाहाबाद में कुंभ मेला, 1765–1954। ऑक्सफोर्ड यूनिवरसिटि प्रेस
5. कंछल, बीएल (2013) बाबा बैद्यनाथ धामः 3डी स्कैनिंग और वास्तु छायांकन का उपयोग कर वास्तु संरक्षण पर एक अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ हेरिटेज आर्किटेक्चर, 4(3), 278–287
6. जोशी, एम (2014), स्थानीय समुदाय पर बैद्यनाथ धाम मंदिर परिसर का सामाजिक–आर्थिक प्रभाव, साउथ एशियन जर्नल ऑफ टूरिज्म एंड हेरिटेज, 7(2), 56–69
7. गिरी, एस. (2015), बैद्यनाथ धाम मंदिर परिसर में अनुष्ठान और धार्मिक प्रथाएं, जर्नल ऑफ इंडियन कल्चर एंड ट्रेडिशन, 12(2), 235–247
8. वर्मा, ए. (2017), सामाजिक सद्भाव और आपसी संवाद को बढ़ावा देने में बैद्यनाथ ध ाम मंदिर परिसर की भूमिका, जर्नल ऑफ पीस स्टडीज, 24(2), 123–137
9. शर्मा, आर. (2019), बारह ज्योतिर्लिंगों का आध्यात्मिक महत्वः बैद्यनाथ धाम के विशेष संदर्भ में एक अध्ययन, धर्म और आध्यात्मिकता का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 5(1), 23–33